बारह भावना

अनित्य भावना

संयोग क्षणभंगुर सभी, पर आत्मा ध्रुवधाम है।
पर्याय, लयधर्मा परंतु द्रव्य शाश्वत धाम है।
इस सत्य को पहचानना ही भावना का सार है।
ध्रुवधाम की आराधना, आराधना का सार है।

अशरण भावना

जिंदगी एक पल कभी कोई बढ़ा नहीं पायेगा।
रस रसायन सुत सुभट कोई बचा नहीं पायेगा।
सत्यार्थ है बस बात यह कुछ भी कहो व्यवहार में।
जीवन मरण अशरण, शरण कोई नहीं संसार में।

संसार भावना

संसार है पर्याय में , निज आत्मा ध्रुवधाम है।
संसार संकटमय परंतु आत्मा सुख धाम है।
सुखभाव से जो विमुख वह पर्याय ही संसार है।
ध्रुवधाम की आराधना आराधना का सार है।

एकत्व भावना :

एकत्व ही शिव सत्य है, सौंदर्य है एकत्व में।
स्वाधीनता सुख शांति का आवास है एकत्व में।
एकत्व को पहचानना ही भावना का सार है।
एकत्व की आराधना आराधना का सार है।

अन्यत्व भावना :

निज देह में आतम रहे, वह देह भी जब अन्य है।
तब क्या करे उनकी कथा , जो क्षेत्र से भी भिन्न है।
जो जानते इस सत्य को, वे ही विवेकी धन्य है।
ध्रुवधाम की आराधना की, बात ही कुछ अन्य है।

अशुचि भावना :

इस देह के संयोग में जो वस्तु पल भर आएगी।
वह भी मलिन मल मुत्रमय दुर्गन्धमय हो जायेगी।
किन्तु रहा इस देह में निर्मल रहा जो आत्मा।
वह ज्ञेय है श्रद्धेय है बस ध्येय भी वह आत्मा। ।

आश्रव भावना :	संयोगजा चित्तवृत्तियां भ्रम कूप आश्रव रूप है। दु:ख रूप है दु:ख करण है अशरण मलिन जड़ रूप है। संयोग विरहित आतमा पवन शरण चिद रूप है। भ्रमरोगहर संतोषकर सुखकरण है सुखरूप है।
संवर भावना :	मैं ध्येय हूँ, श्रद्धेय हूँ, मैं ज्ञेय हूँ , मैं ज्ञान हूँ। बस, एक ज्ञायक भाव हूँ मैं , मैं स्वयं भगवान हूँ। यह ज्ञान , यह श्रद्धान बस यह साधना आराधना। बस यही संवर तत्त्व है, बस यही संवर भावना।
निर्जरा भावना :	शुद्धात्मा की रूचि संवर साधना है निर्जरा। ध्रुवधाम निज भगवान् की आराधना है निर्जरा। वैराग्य जननी बंध की विध्वंसनी है, निर्जरा। है साधकों की संगीनी आनंद जननी निर्जरा।
धर्म भावना :	निज आत्मा को जानना पहचानना ही धर्म है। निज आत्मा की साधना आराधना ही धर्म है। शुद्धात्मा की साधना आराधना का मर्म है। निज आत्मा की ओर बढ़ती भावना ही धर्म है।
लोक भावना :	निज आत्मा के भान बिन,षड़ द्रव्यमय इस लोक में। भ्रमरोगवश भव-भ्रमण करता रहा त्रैलोक्य में। निज आत्मा ही लोक है, निज आत्मा ही सार है। आनंदजननी भावना का, एक ही आधार है।
बोधिदुर्लभ भावना :	नर देह उत्तम देश, पूरण, आयु शुभ, आजीविका। दुर्वासना की मंदता, परिवार की अनुकूलता। सत सज्जनों की संगति, सद्धर्म की आराधना। है उत्तरोत्तर महादुर्लभ आत्मा की साधना।